हिमाचल प्रदेश की

सर्प प्रजातियाँ

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र

वित्तपोषक : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

"Medically Significant Species of Himachal Pradesh" (Pics by Vishal Santra)

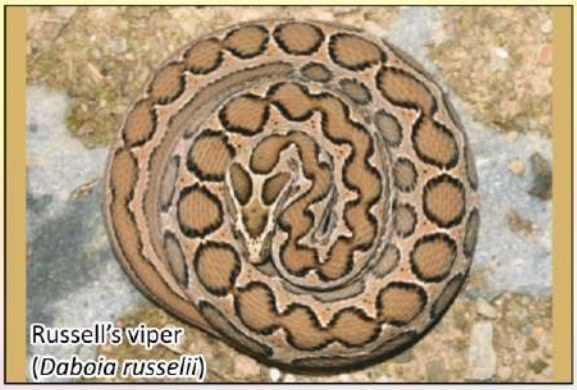

PROTOCOL FOR INITIAL MANAGEMENT OF SNAKEBITE AT HEALTH FACILITIES (PHC/CHC)

SUSPECTED SNAKEBITE

↓

CHECK VITALS OF PATIENT

↓

Assess & Treat as per ABCDE approach \ ABCDE (Airway, Breathing, Circulation, Disability, Exposure)

STABLE PATIENT ← **UNSTABLE PATIENT**

↓

Checks for Signs and Symptoms of Snakebite Envenomation

↓

Local Symptoms (PONDS)

Pain
Oozing
Node enlargement
Discoloration
Swelling and Blisters

Krait bite does not produce local symptoms, but can cause abdominal pain/ vomiting / ptosis

Neurological Symptoms

- Drooping of eyelids
- Difficulty in swallowing and speaking
- Neck muscle weakness / difficulty in lifting head
- Difficulty in breathing
- Weakness in all 4 limbs

Hematological Symptoms

- Bleeding from ears, nose, throat, gums (or any other site distant from the bite site)
- 20 Minute Whole Blood Clotting Test (20 WBCT) Positive (Not Clotted)
- Hypotension and Shock

if victims does not show signs or symptoms of envenomation, keep under observation for 24hours and then discharge

If victim shows signs or symptoms of envenomation

↓

- START Anti Snake Venom (ASV) ASV Dosage (for Neuroparalytic / Vasculotoxic Snakebite)
- ASV 10 vials IV in Normal Saline (5-10ml/kg body weight) over 30minutes
- ASV to be repeated for patients who are improving or worsening
- In Neuroparalytic envenoming where the biting snake is not known or in proven cases of Cobra envenoming give Atropine & Neostigmine (AN) in addition to ASV
- Give Antibiotics as needed
- Give Injection Tetanus Toxoid (TT) IM in Deltoid Region (not in Gluteal Region) to all snakebite patients except those with coagulopathy, in which case, the injection is postponed until hemostasis is achieved (bleeding has stopped)
- Monitor for development of Adverse Reaction to ASV for 2 hours from starting ASV

ADVERSE REACTION

If adverse reaction occurs due to ASV, immediately STOP ASV temporarily

↓

Treatment for Adverse Reaction

- Adrenaline Injection IM for Adult 0.5 mg. (in Deltoid Region), for Child- 0.01 mg/kg body weight to be given in antero-lateral aspect of thigh (middle 1/3rd).
- Repeat dose after 5 minutes if patient has not improved.
- Hydrocortisone injection IV, for Adults 100mg for child- 0.2 mg/kg body weight
- Ranitidine injection IV, for Adult 50mg, for child- 0.8 mg/ kg body weight
- Chlorpheniramine injection IV, for Adult 10 mg, for child- 20ml/kg body weight
- Nebulize with Salbutamol
- Administer High-flow Oxygen,
- Fluid bolus for shock, Adult-500-1000 ml, for child- 20ml/kg body weight

↓

Monitor for recovery from Adverse Reaction

↓

When the Patient has recovered

- Restart ASV slowly for 10-15 min,
- Resume Normal Saline with ASV at normal drip rate

↓

If No Sign of Recovery/ Adverse Reaction persists → Refers to Higher Center

NO ADVERSE REACTION

↓

Complete full dose of ASV

↓

Indications for Referral to Higher Center

- Requirement of repeat dose of ASV
- Development of Compartment Syndrome
- Signs of Stroke
- Signs of Acute Coronary Syndrome
- Acute Kidney Injury, need for Dialysis
- Persistent bleeding, need for Blood Transfusion
- Cellulitis / Gangrene / Progressive Septicemia
- Respiratory Failure and prolonged need for Mechanical Ventilation

↓

Refers to Higher Center

For details, refers to Standard Treatment Guidelines for Management of Snakebite

20 Minute Whole Blood Clotting Test (20 WBCT)

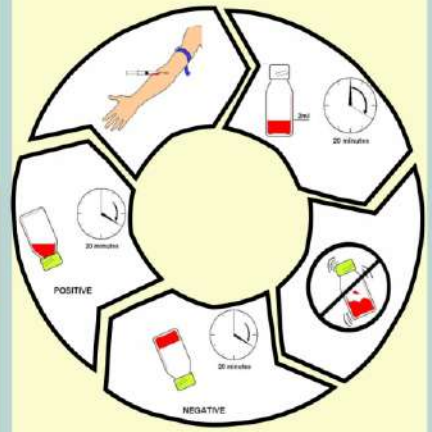

1. Take 1-2 milliliters of venous blood in a clean, dry glass bottle or vial
2. Allow to stand at room temperature for 20minutes
3. Leave undisturbed
4. Tip and record the presence or absence of a complete clot
5. If no clot forms and the blood remains liquid, the test result is positive

In case where the 20WBCT result is inconsistent with the patient's clinical conditions, repeat the test in duplicate, including a "control" (blood from a healthy person).

20 WBCT may remain negative in patients with evolving "venom-induced consumption coagulopathy" (VICC), therefore, the patient should be re-tested hourly for the first 3 hours and 6 hourly for 24 hours unitl either test result is not clotted or clinical evidence of envenomation to ascertain if dose of ASV is indicated

Snake Bite Prevention and Control, NCDC, DGHS, MoHFW, GoI

सामान्य जानकारी

ग्रीष्म ऋतु और इसके बाद वर्षा; जब सांपों की दुनियां सजीव हो उठती है सभी प्रकार के सांप चिरकालीन शीत–निद्रा से जाग कर सक्रिय हो जाते हैं। वर्षा में भोजन का बाहुल्य होता है, सांप पुष्ट हो कर प्रजनन करते हैं और उनके बच्चे तथा स्वयम् सांप यथासम्भव पर्याप्त भोजन कर; आगामी "शीत–निद्रा" के लिए अतिरिक्त "ऊर्जा–स्रोत के रूप में वसा का संग्रह करते हैं।

सभी प्रकार के सांप अपने आहार को साबुत ही निगल जाते हैं। सामान्यतः सांप छिपकली, गिरगिट, पक्षी उनके अंडे तथा बच्चों को शिकार करते हैं। मेंढक, चूहे और छछून्दर सांप का प्रिय भोजन हैं, इनकी खोज में वे घरों में आते हैं। कोबरा, किंगकोबरा, अजगर जैसे बड़े सांप गीदड़, उदबिलाव, बिलाव, खरगोश,भेड़, बकरी,सूअर, हिरन और उनके बच्चों को अपना शिकार बनाते हैं। अजगर एक बार में एक दिन के आहार के लिए प्रयुक्त आहार ऊर्जा से सौ गुना अधिक आहार खा सकते हैं। अनेक सांप; विशेषतः सविष सांपों में स्वजाति भक्षण भी पाया जाता है। सांप अपने सिर से तीन गुना बड़े व्यास वाले आहार को आसानी से निगल सकता है। सभी सांपों के ऊपर और निचले जबड़े में; अन्दर की ओर मुड़े हुये नोकीले दांतों की पक्तियां होती है, जिससे एक बार मुख में आया आहार अन्दर तो जा सकता है, परन्तु उसका मुख से बाहर निकलना लगभग असम्भव होता है। आहार प्राप्त करने के बाद, सांप एकान्त में चला जाता है, जहां लम्बे समय तक किसी की नजर न पड़े और कोई बाधा न उपस्थित हो, क्योंकि आहार निगलने में काफी समय लगता है। आहार नलिका में भक्ष्य को दर्शाने वाला भाग काफी मोटा नजर आता है। भोजन को पचाने में पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है,जो आहार के आकार पर निर्भर करती है। इस भोजन प्रक्रिया के लिए नितान्त एकान्त चाहिये होता है; क्योंकि ऐसी स्थिति में वह बहुत निष्क्रिय तथा लाचार होता है।

(Himalyan Trinket)
Pic by Vishal Santra

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

अधिकांश सांप अपने भक्ष्य को जीवित ही निगलना प्रारम्भ कर देते हैं, क्योंकि वह पर्याप्त संघर्ष नहीं कर पाता। लेकिन भक्ष्य अनुपात में पर्याप्त बड़ा हो तो, सांप अपने भक्ष्य को मार कर निष्क्रिय करने के लिए मुख्यतः दो विभिन्न तरीके अपनाते हैं। सविष सांप उसे डस कर, अपना जहर उसके शरीर में डाल देते हैं और निष्क्रिय हो जाने पर मुख की तरफ से निगलना प्रारम्भ कर देते हैं, जिससे बिना किसी दिक्कत के उसे अन्दर सरकाया जा सके। अजगर जैसे कुछ बड़े निर्विष सांप, फुर्ती से शिकार के शरीर पर कुण्डली मार कर उसको धीरे–धीरे भींचना प्रारम्भ कर देते हैं। शिकार के प्रत्येक बार सांस बहार छोड़ने के बाद कुण्डली कसी जाती है, इस तरह उसकी छाती हर बार सांस छोड़ने के बाद; लगातार भींची जाती है। अन्त में सांस लेने के लिए छाती फैल नहीं पाती और फेफड़ों में हवा नहीं जा पाती, वह सांस न ले सकने के कारण, दम घुटने से मर जाता है, इसके बाद भोज्य को निगला जाता है।

सांप सामान्यतः किसी की नजरों से दूर एकान्त में रहना पसन्द करते हैं और भोजन तो नितान्त एकान्त में रह कर ही करते हैं। अतः प्रायः खाने की प्रक्रिया के दौरान दृष्टि–गोचर नहीं होते। वास्तव में कुछ सांप, जैसे कोबरा सम्पर्क में आने पर झटके के साथ फुकार मारते हैं, फू.....फू..... या श्वास लेने की प्रक्रिया में तेज और लम्बी आवाज करते हैं, सू...उ.....सू.....उ..... जैसे रसल्स वाइपर, अतः लोगों का ख्याल था कि सांप हवा के सहारे जीवित रह सकते हैं। वैसे सामान्यतः सांप को प्रति सप्ताह एक चूहे या मेंढक की आवश्यकता होती है। कुछ लोग समझते हैं कि सांप दूध पीता है, जो नितान्त भ्रामक धारण है। सांप विशुद्ध रूप से मांसाहारी जीव है, हाँ कुछ हालतों में पानी के अभाव में, दूध को जीलयांश की पूर्ति के रूप में ले सकता है।

दृष्टिगोचर होने वाले सांपों में करीब 20–22 प्रतिशत ही सविष या जहरीले होते हैं।

विषहीन सांपों के विषदन्त नहीं होते। कुछ निर्विष सांपों के मुखस्राव में शिकार को निष्क्रिय करने की क्षमता होती है, लेकिन इसके दंश से प्राणी मरता नहीं, हाँ दंश स्थान पर हल्की सूजन; खुजली या लालिमा हो सकती है।

Himalayan Pitviper
(Gloydius Himalayanus)

© Vishal Santra 2018

लेकिन सर्प–दंश का डर समाज में इतने भयंकर रूप में है कि अनेक व्यक्ति केवल डर के कारण हृदयघात से मर जाते हैं। आयुर्वेद ग्रन्थों में इसे "सर्पागाभिहत" या "शंका–विष" कहा गया है। आंकड़ों के अनुसार निर्विष सांप के डसने के बावजूद, डर के मारे हर वर्ष कई लोग मर जाते हैं। डर के सदमें के लक्षणों में, ठण्डा पसीना आना, मूर्च्छा तथा मितली होना प्रमुख हैं। ध्यान रहे, कि भय का सदमा आदमी के लिए प्राणघातक हो सकता है।

अनेक बार कुछ छोटे सविष सांप, जैसे ग्रीन पिटवाइपर इतना जहर नहीं छोड़ पाते कि व्यक्ति मर जाये, अर्थात घातक मात्रा से कम या सविष सांप किसी कारण पूरा विष शरीर में नहीं डाल पाते, जिसे "शुष्क दंश" या "ड्राइ–बाइट" कहा जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की तबीयत तो प्रायः खराब हो जाती है, परन्तु कुछ दिन बीमार रहने के बावजूद बच जाता है। चिकित्सक के आत्मविश्वास क्रिया कलापों से भी रोगी को पर्याप्त फायदा होता है।

कुछ वर्ष पूर्व हॉफकिन संस्थान; मुम्बई में एक परीक्षण किया गया। उड़ीसा–बिहार से कुछ ख्याति प्राप्त ओझाओं को परीक्षण के लिए बुलाया गया। दो गिनिपिग लिये गये, दोनों के शरीर में भार के अनुपात से कॉमन कोबरा का विष इन्जेंक्ट किया गया। चिकित्सा के लिये, एक ओझाओं को दिया गया और दूसरे गिनिपिग को एन्टिविनम दिया गया। ओझा तन्त्र–मन्त्र कर उसे नहीं बचा पाये, जबकि प्रतिविष दिया गया गिनिपिग बच गया। ओझाओं ने तर्क दिया; कि यह नाजुक हृदय का प्राणी है। पुनः यही प्रयोग दो भेड़ों पर किया गया, परन्तु ओझा इसमें भी सफल नहीं हो पाये। इसलिए विषैले सांप द्वारा काटे व्यक्ति को तंत्र–मंत्र नहीं बचा सकता, उसे तुरन्त अस्पताल लाना चाहिए।

Central Asian cobra
Naja oxiana
Pic by Vishal Santra

अधिकांश सविष सांप; जैसे–करैत; कोबरा; वाइपर आदि घातक मात्रा, फैटल डोज अर्थात् किसी सांप के जहर की वह न्यूनतम मात्रा, जो एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति

को मार दे, से कई गुना ज्यादा विष शरीर में डाल देते हैं। ऐसी स्थिति में बिना "सर्प प्रतिविष" के बचना पूर्णतः असम्भव होता है। प्रतिविष जितनी जल्दी दिया जा सके, सफलता उतनी ही अधिक होती है। क्योंकि प्रतिविष सर्प विष को निष्क्रिय करता है, लेकिन विष ने जो नुकसान शरीर को पहुँचा दिया है, उसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। आयुर्वेद ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख है "अन्यथा तु त्वरया प्रदीप्त आगारवत् भिषक्" चिकित्सक को; तीव्र अग्नि से जलते भवन को जलने से बचाने की तरह, सर्प विष में भी शीघ्रता से चिकित्सा करनी चाहिए। अथर्ववेद में कहा है "विज्ञान दीपेन संसार भयम् निवर्तते" अर्थात किसी विषय की विशिष्ट जानकारी होने पर, उससे सम्बन्धित भय समाप्त होता है।

जैसा कि पहले भी कहा गया है; कि सभी प्रकार के सांपों के मुख में दांतों की पंक्तियां होती हैं, जो अन्दर की तरफ मुड़े हुए और नोकीले होते हैं। इसके अतिरिक्त सविष सांपों के ऊपरी जबड़ों में दांई और बांई ओर दो विषदन्त–फैंग्स होते हैं, जो अन्दर से नालीदार होते हैं और गाल में स्थित विष पोटलियों से जुड़े होते हैं। जब सविष सांप काटता है तो इन दोनों विषदन्तों से विष प्राणी के शरीर में इंन्जेक्सन की सुई की तरह भीतर चला जाता है, और रक्तसंचार में जाने से समस्त शरीर में फैलने लगता है।यदि शरीर पर घाव न हो, तो सांप का ज़हर त्वचा पर पड़ने पर या मुख से सेवन करने पर कोई घातक प्रभाव नहीं रखता, लेकिन शर्त यह है कि कहीं भी घाव नहीं होना चाहिए, ताकि विष रक्त संचार में न जा सके। भारत के कई आदिवासी क्षेत्रों में और अनेक देशों में सांप का मांस खाया जाता है, इसे मछली से जयादा स्वादिष्ट कहा जाता है। सफाई में सिर काट कर फैंक देते हैं।

सविष सांप के काटने पर, ध्यान से देखने पर त्वचा पर दो विषदन्तों के छेद देखे जा सकते हैं। सपेरे विषदन्तों को तोड़ कर खेल दिखाते हैं लेकिन उन्हें नहीं मालूम होता, कि ये विषदन्त पुनः आ जाते हैं और इस तरह सर्पदंश से उनकी मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा दांत तोड़ने के बावजूद; दांत की शेष रही जड़ें काटने पर घाव करने में समर्थ होती हैं और इस तरह विषदंशित व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट हो सकता है। अनेक बार सपेरे सांप की विषग्रन्थि को निकाल देते हैं, लेकिन ऐसी स्थिति में सांप संक्रमण से मर जाता है। अनेक बार सपेरे सांप के मुख पर सेलोटेप लपेट देते हैं, अतः वह मुख नहीं खोल पाता और दंश में असमर्थ होता है, जीभ तो जबड़े के दोनो होठों के बीच से अन्दर बाहर होती रहती है।

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

सविष सांप और सर्पदंश

आमतौर पर दिखाई देने वाले सांपों में केवल 24 प्रतिशत ही सविष (जहरीले) होते हैं। शेष अधिकांश सांप जहरीले नहीं होते। इनके काटने से व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लोगों को सांप काटते हैं और लगभग 50 हजार लोगों की मृत्यु होती है, क्योंकि अधिकांश लोगों को निर्विष सांप काटते हैं।

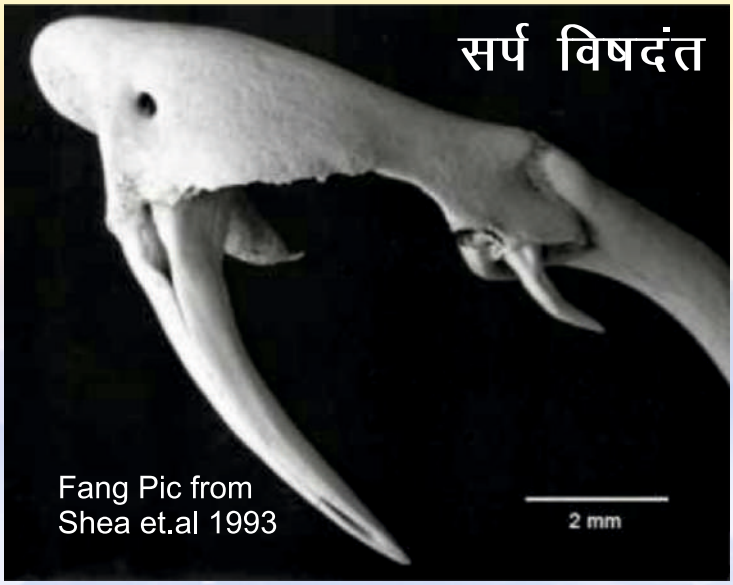

सविष सांपों में करैत, नाग (कोबरा), रसल्स वाइपर (घुणस) और फुरसा मुख्य हैं। आयुर्वेद ग्रन्थों में इन्हें राजिमन, दर्वीकर और मण्डलिन कहा गया है। करैत और नाग के काटने से मृत्यु 5 से 10 घण्टे के अन्दर हो सकती है, जो शरीर में प्रविष्ट विष की मात्रा पर निर्भर है। करैत और नाग विष नाड़ी संस्थान (Neuro Toxic) पर असर करता है, उत्क्लेश; वमन; पेटदर्द; मांसपेशियों की शिथिलता सामान्य लक्षण हैं। इसका विष नाड़ी संस्थान को निष्क्रिय कर देता है। व्यक्ति फेफड़े और हृदयघात से मर जाता है। जबकि वाइपर सांप का जहर रक्तवह संस्थान (Hemolytic) पर प्रभाव रखता है। इसका विष रक्त कोशिकाओं और मांसपेशियों को गला देता है, आन्तरिक रक्तस्राव और रक्त जमने से व्यक्ति की मौत हो जाती है। नाग के काटने पर, दंशस्थान पर जलन; झुंझुनाहट, दर्द, लालिमा और सूजन होती है, जबकि वाइपर के काटने पर, स्थानीय लक्षण तीव्र होते हैं, दंशस्थान पर सूजन, तीव्र रक्त मिश्रित स्राव और वेदना होती है; सविष सांपों के काटने पर, दंशस्थान पर दोनों विषदंतों के गाढने के चिन्ह देखे जा सकते हैं। ये दो विषदन्त केवल विषैले सांपों के ऊपर के जबड़े में दांई और बांई तरफ होते हैं। करैत सांप अकसर रात को चूहों की खोज में घर में घुस जाते हैं, और गलती से मनुष्य को काट लेते हैं। करैत के विषदन्त छोटे और तेज होते है जिससे की इसके काटने पर दिखाई नहीं देते और सुबह व्यक्ति मूर्छित अवस्था में पाया जाता है। करैत के काटने से जहां दांत के निशान नहीं दिखाई देते वहीं कई बार दर्द का

पता भी नहीं चलता।

करैत एक बार में अपनी आयु के अनुसार 8 से 10 और नाग 12 से 30 तक अण्डे देते हैं। नाग और अन्य बहुत से सांप साल में कई बार प्रजनन करते हैं। अण्डों का आवरण चर्मिल अर्थात् चमड़े जैसे होता है। सम्भवतः खेतों में चूहों के बिल के पास हल चलाते हुए इन्हें देखा जा सकता है, क्योंकि सांप चूहों का भक्षण कर, उनके बिल की गहराई में अण्डे देते हैं। वाइपर प्रजाति के सांप सीधे बच्चों को जन्म देते हैं, जिनकी संख्या 20 से 40 तक होती है। करैत और नाग की अपेक्षा; वाइपर सांप विकास की दृष्टि से उन्नत नजर आते हैं। इनमें अण्डे की अपेक्षा, सीधा बच्चे पैदा करने की क्षमता विकसित कर ली है, इन सपोले का विष भी घातक प्रभाव रखता है।

प्राणी मात्र शरीर संचालन के लिये पेड़–पौधों द्वारा सूर्य की रोशनी से निर्मित भोजन को ऊर्जा के लिए उपयोग करता है। हम विपरीत परिस्थितियों के लिए भोजन का भण्डारण करते हैं। शीतरक्तीय प्राणी शीतनिद्रा से पूर्व; शरीर में वसा के रूप में ऊर्जा का संचय करते हैं। संभवतः आपने शीतऋतु से पूर्व ग्रामीण क्षेत्रों में घास की पखडण्डी पर रसल्स वाइपर को कुण्डली मार कर; सिर बीच में रखकर; धूप सेकते हुए देखा होगा। कछुवा, मगरमच्छ आदि शीतरक्तीय प्राणी कुछ मात्रा में सीधा सूर्य से ऊर्जा ले सकते हैं।

सविष सांपों का संक्षिप्त विवरण

I. कोब्रा या काला नाग – इसकी दो प्रजातियां पाई जाती हैं। (क) – कामन कोब्रा या राजसांप और (ख) किंग कोब्रा या राजनाग। इन्हें फन के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है, ये गर्दन की पसलियों को फैला कर फन बना लेते हैं। कामन कोब्रा सम्पूर्ण भारत में पाया जानें वाला सांप है, यह दिनचारी होता है, परन्तु प्रायः सांयकाल या ब्रह्म मुहूर्त में देखा जाता है। सामान्य नागदंश से भारत में सर्वाधिक मौतें होती है। कोब्रा के विषदंत छोटे और नालीदार होते हैं, जो विषग्रंथी से जुड़े होते हैं।

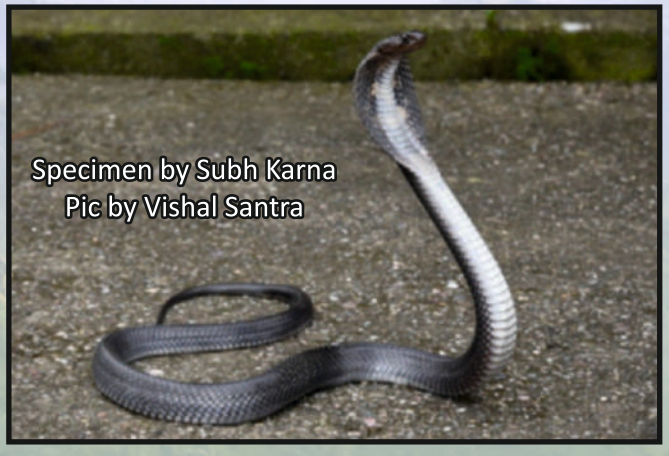
Specimen by Subh Karna
Pic by Vishal Santra

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

किंग कोब्रा (नागराज) – यह संसार का सबसे लम्बा विषधर सर्प है। इसकी लम्बाई 5 से 6 मीटर तक हो सकती है। सांपों की यह प्रजाति दक्षिण पूर्व एशिया एवं भारत के कुछ भागों में खूब पाई जाती है। एशिया में यह सर्वाधिक खतरनाक सांपों में से एक है।

अभी तक यह सर्प हिमाचल में कभी नहीं देखा गया था, परन्तु हाल ही में शिवालिक पहाड़ों की तलहटी में, जिला सिरमौर के गीरिनगर क्षेत्र (जो की कोलर वन क्षेत्र के नज़दीक है) में एक स्थानीय नीवसी प्रवीन ने इस सर्प का वीडियो सोशल मीडिया में प्रसारित किया था। जिसकी पुष्टि प्रदेश के वन विभाग द्वारा भी की गई थी। इससे पहले किंग कोबरा सर्प को हिमाचल से लगने वाले राज्य उत्तराखण्ड में भी देखा गया है। किंग कोबरा सर्प का हिमाचल में पाए जाना पर्यावरण कि दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण खोज है।

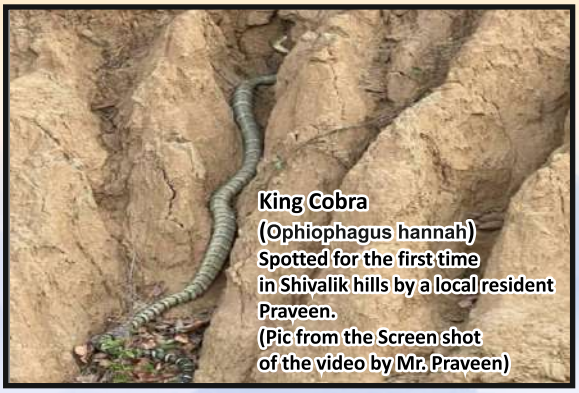
King Cobra
(Ophiophagus hannah)
Spotted for the first time
in Shivalik hills by a local resident
Praveen.
(Pic from the Screen shot
of the video by Mr. Praveen)

यदि कुछ चतुर लोगों ने, अपनी नैसर्गिक; काल्पनिक बौद्धिक प्रतिभा का उपयोग नहीं किया है, तो तथाकथित वासुकी, तक्षक, शेषनाग का सम्बन्ध इसी प्रजाति से है। इनके कथानक हमें प्राकृतिक संतुलन में सांपों की महत्वपूर्ण भूमिका दर्शाते हैं।

Common Krait
(Bungarus Caeruleus)

2. करैत, काला भुजंग या चितकौडिया – ये चमकीली आभा लिये इस्पाती रंग के काले सांप होते हैं। इन्हें मैदानी सांप भी कहा जाता है, ये रात्रिचर होते हैं और नर–मादा प्रायः इकट्ठे पाये जा सकते हैं। इनके बारे में प्रसिद्ध है कि इसका

Coral Snake from Kullu/Chamba

काटा सुबह नहीं देख पाता। इसकी दो प्रजातियां पाई जाती हैं।

(क) सामान्य करैत – इसके पूरे शरीर पर पीठ के आरपार छोटे–छोटे सफेद बिन्दुओं वाली 40 पट्टियां होती हैं।

(ख) पट्टीदार करैत – इसके शरीर में पूरी पीठ पर क्रमशः काले और पीले रंग की पट्टियां होती हैं।

3.रसल्स वाइपर, घोणस, दबोइया या कंदार –

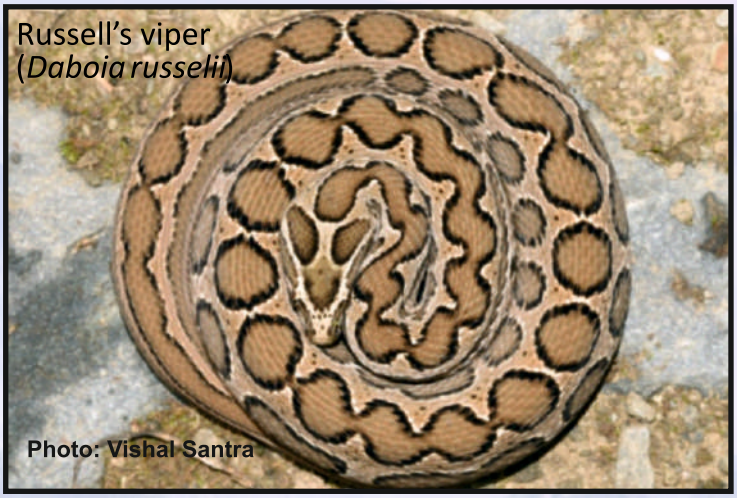

यह मोटा, भारी ओर सुस्त सांप होता है। छेड़ने पर लम्बी सूं...उ....; सूं.....उ..... की तेज आवाज के साथ शरीर को फुलाता और सिकोड़ता है। जब कि कोब्रा सांप झटके के साथ शु.....शु..... करता हुआ आक्रमण करता है। वाइपर का सिर चपटा; भारी और तिकोना होता है, बड़े जबड़े के कारण गर्दन साफ दिखाई देती है। इसके विषदंत 1 सेंटीमीटर से ज्यादा लम्बे हो सकते हैं, यह अंदर इंजैक्शन की सुई की तरह नलीदार होते हैं। सामान्य अवस्था में मुख के अन्दर मुड़ कर विश्राम की स्थिति में रहते हैं। शरीर पर स्पष्ट गोल–गोल बड़े वृत्ताकार चक्तों की तीन पंक्तियां होती है, एक रीड़ के साथ और एक–एक दायें बायें। इसी कारण इसे **'चेन–स्नेक'** भी कहा जाता है। इसकी विशिष्ट शारीरिक रचना के कारण, यदि आप इसे एक बार ध्यान से देख लें तो इसे पहचानने में कभी भूल नहीं कर सकते। यदि आपने पहले भी कभी इस तरह का सांप देखा होगा; तो आप समझ जायेंगे कि यह कौन सा सांप था। सभी सांपों की तरह यह अपने आगे के एक तिहाई भाग को स्प्रिंग की भांति अंग्रेजी अक्षर 'S' की तरह बना कर बैठा रहता है और आक्रमण के समय यह भाग एक झटके के साथ, तीव्रगति से आगे बढ़ता हुआ दंश करता है।

भारतीय सांपों में इसका दंश सबसे खतरनाक माना जाता है।

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

इसी प्रजाति का एक सांप **'ग्रीन पिट वाइपर'** है, जो गहरी हरियाली, बांस का झुण्ड और टमाटर के खेतों में प्रायः देखा जाता है। इसे आप बरसात के मौसम में अपने खेत में देख सकते हैं। तेज हरे रंग का यह छोटा सांप जहरीला तो होता है; परन्तु घातक मात्रा में जहर नहीं छोड़ पाता और इसके विष से व्यक्ति मरता नहीं।

4.फुर्सा (सॉ–स्केलड वाइपर) – यह 30–35 सैंटीमीटर लम्बा छोटा सांप है। इसके सिर पर क्रास या भाले जैसा विशिष्ट चिन्ह बना होता है। इसके आरे जैसे दांतेदार शल्क होते हैं, जब यह चलता है तो शल्कों की रगड़ से आरी चलने की आवाज आती है। यह विषैला होता है, इसके दंश से व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। यह सांप हिमाचल में कम ही देखा गया है।

कई बार लोग पूछते हैं कि इन में से कौन सा सांप सबसे जहरीला होता है? मुख्य सांपों की एक बार में छोड़े जाने वाले जहर की मात्रा अलग अगल पाई जाती है, जो की कुछ बूंदों से लेकर 1.5 मि.ली. से 2 मि.ली तक हो सकती है जो की सर्प की उम्र, लम्बाई इत्यादि पर निर्भर कर सकती है। सर्प विष की कम से कम मात्रा भी इंसानों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। इन सभी चार जहरीले सांपों का सर्प–प्रतिविष सभी बड़े अस्पतालों में होता है और इनके विष का एकमात्र इलाज है।

चिकित्सा

केन्द्रीय अनुसन्धान संस्थान कसौली, हि॰प्र॰ में बनने वाला सर्प–प्रतिविष (स्नेक एन्टि वीनम) उपरोक्त चारों सांपो की प्रभावी औषधि है। यह निर्विष पाउडर या तरल रूप में होता है तथा साधारण रेफ्रिजरेटर में रखा जा सकता है। इसका पूर्ण विवरण तथा प्रयोग विधि साथ में होती है। सर्पदंश कृषि से जुड़ा पेशागत खतरा है, अतः इसे ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत स्वास्थ्य केन्द्रों में रखा जाना चाहिए। सर्पदंश ग्रामीण इलाकों में होते हैं, जब तक मरीज शहर के स्वास्थ्य केन्द्र में आता है; तब तक बहुत देर हो चुकी होती है; विष शरीर को काफी नुकसान पहुँचा चुका होता है। अतः प्रतिविष देने का पूरा फायदा नहीं हो पाता। इसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत चिकित्सकों को विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

सर्पदंश होने पर काटे गए निशानों पर ना जाएं क्योंकि कई बार करैत सांप के निशान नहीं दिखाई देते और कई बार यह निशान एक, दो या ज्यादा भी हो सकते हैं। सर्पदंश से पीड़ित होने पर नेशनल एम्बुलेन्स सेवा–108 पर फोन किया जा सकता है क्योंकि सर्पदंश का केवल सर्प–प्रतिविष ही पक्का इलाज है। यदि व्यक्ति मूर्छित अवस्था में हो तो उसे साथ वाले चित्र में दर्शाई अवस्था में जिसे लेफट लेटरल पोज़िशन या रिकव्री पोज़िशन कहते है, में लिटा कर अस्पताल ले जाएं ताकि मरीज की जीभ से उसका सांस न रूके। मरीज को ज्यादा हिलाएं डुलाएं नहीं तथा उत्तेजित न करें व शांत रखें।

यदि सांप ने दंश किया है या काटा है; तो आपका सर्वप्रथम् प्रयास यह होना चाहिये कि जितनी जल्दी हो सके, मरीज को सक्षम चिकित्सालय में ले जायें क्योंकि विष शरीर में प्रविष्ट होते ही तीव्रता से शरीर को नुकसान करना प्रारम्भ कर देता है। 'सक्षम' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि यदि उक्त चिकित्सालय में यह सुविधा नहीं है तो डाक्टर अन्य संस्थान के लिए रेफर कर देगा, इससे और विलम्ब

Mr. Vishal Santra demonstrating left lateral position (Recovery Position) in case of unconscious patient.

Pic by : Dr. Omesh Bharti

CALL 108 AMBULANCE in case of SNAKE BITE

नेशनल एम्बुलेन्स सेवा–108 में सर्प–प्रतिविष(ASV) उपलब्ध रहता है

होगा और विष को नुकसान पहुँचाने का और मौका मिल जायेगा। इस बात की पुनर्वृत्ति इसलिए की गई है कि यह मुख्य बिन्दू है। लेकिन यह भी तथ्य है; कि अधिकांश लोगों को निर्विष सांप ही काटते हैं लेकिन सर्प–दंश का भय इतना ज्यादा होता है कि व्यक्ति हृदयघात से मर जाता है। यदि आपने काटने वाले सांप को देख लिया है या उसे मार दिया है, तो आवश्यकता होने पर उसकी पहचान की जा सकती है। सांप द्वारा काटे गए घाव को ब्लेड से नहीं काटें, ना ही चूसें, ना ही अंग को बांधे और न ही उस अंग को हिलाएं, ऐसा करने से सर्प विष तेज़ी से शरीर में फैल सकता है और घातक सिद्व हो सकता है।

हाथ पावं में सर्पदंश हो जाने पर, हाथ में पहने हुए कढ़े अंगूठी व पैर में पहने हुए बिछिया या पायल इत्यादि तुरन्त उतार दें क्योंकि अंग में सूजन हो जाने पर इनकी वजह से खून का बहाव रूक सकता है तथा ज्यादा बुरे प्रभावों में अंग को काटना भी पड़ सकता है।

सर्प–दंश से प्रभावित अंग और कारण

(1) पैर–72 प्रतिशत – जमीन के नज़दीक होने से; आसानी से सांप की पहुँच में होते हैं। पैर प्रायः नंगे और गतिशील होते हैं। किसी भी प्राणी की तरह सांप गतिशील वस्तु से भयभीत होता है और उसे लक्ष्य बनाता है।

(2) हाथ – 25 प्रतिशत – हाथ भी अपेक्षाकृत जमीन के निकट होते हैं, खासकर ढलानी पर्वतीय क्षेत्रों में, और ये नंगे तथा गतिशील होते हैं। व्यक्ति घास आदि काटने और उखाड़ने के लिए झाड़ी में हाथ डालता है और सांप काटने का शिकार हो जाता है।

(3) सिर और धड़ – 3 प्रतिशत – सिर और धड़ प्रायः लेटी सा सोई अवस्था में ही सांप की पहुँच में होते हैं।

समय : सांयकाल या रात्री – 68 प्रतिशत–अनेक सांप रात्रिचर होते हैं, अंधेरा होने से व्यक्ति सांप को देख नहीं पाता; और उन पर पैर पड़ने की संम्भावना बनी रहती है।

प्रातः या दोपहर – 32 प्रतिशत–वर्षा के बाद शीतऋतु प्रारम्भ होने पर, कई बार सांप खुली जगह में धूप सेंक रहे होते हैं। शीत कालीन निद्रा निकट होने से भोजन की खोज में सक्रिय होते हैं।

प्रायः लोग पूछते हैं, कि सांप को घर से दूर कैसे रखा जा सकता है। सांप और

बिल्ली दोनो का प्रथम प्रिय भोजन 'चूहा' है। इसके कारण उनमें तीव्र वैमनस्य रहता है। इसी प्रकार सांप और नेवले का वैमनस्य भी जग–जाहिर है। बाकी घर के आस–पास घनी झाड़ियां नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इससे सांप को छिपने का स्थान और गर्मी से राहत मिलती है। जैसा हम जानते हैं, सांप शीत–रक्तीय प्राणी है। हाँ सुगन्ध वाले पौधे न लगाना भ्रामक है क्योंकि सांप में हमारी तरह घ्राण–यन्त्र नहीं होता। सभी प्राणियों की तरह सांप भी सुरक्षित आवास, भोजन की उपलब्धता, प्रजनन और परिवार पालन की मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता होते रहने पर लम्बे समय तक एक ही स्थान पर रह सकता है। पेड़–पौधे, झाड़ियां आदि वानस्पतिक बहुलता वाले क्षेत्र में; प्राणियों के लिए एक खाद्य–श्रृंखला विकसित हो जाती है।

मुख्य निर्विष सांप (हिमाचल प्रदेश)

धामन या रैट स्नेक – क्या आपने कभी 2 या 3 मीटर लम्बा काला सांप घर के आसपास, पेड़ पर चड़ा हुआ या घर के अन्दर अनाज के भण्डार में देखा है। यह प्रायः 'धामन' होता है। यह दिन में घूमने वाला निर्विष सांप है, जिसमें प्रायः काटने की प्रवृत्ति नहीं होती और मनुष्य के निवास के आसपास रहने से मानव का आदि हो जाता है। 'बद अच्छा, बदनाम बुरा' या 'करे कोई भरे कोई' वाली कहावत इस पर चरितार्थ होती है। लोग प्रायः इस सीधे–साधे सांप को जहरीला 'नाग' समझ कर देखते ही मार डालते हैं, क्योंकि बड़ा और काला होने से नाग का भ्रम होता है। यह बड़ी संख्या में चूहों को खाकर हमारे अनाज की रक्षा करता है, इसी कारण इसे **'रैट स्नेक'** अर्थात **'चूहे खाने वाला'** सांप कहा जाता है। 28 चूहों को एक साथ निगलने वाला यह सांप, एक वर्ष में सैंकड़ो चूहों को खा जाता है। सम्भवतः इसी लिये पूर्वकाल से भारत में सर्प पूजा का प्रचलन था। चूहे हमारे भोजन का 25 से 30 प्रतिशत अनाज को नष्ट कर देते हैं। कुतरने के प्रवृत्ति के कारण अन्य यांत्रिक नुकसान का अन्दाज आप स्वयं लगा सकते हैं। एक अनुमान के अनुसार यदि सांप न हो तो चूहे और छछून्दर की संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि पृथ्वी पर आदमी का जीना मुश्किल हो जायेगा। हम सभी जानते हैं, कि चूहे कितनी तीव्र गति से प्रजनन करते हैं। 'धामन' सांपों के अध्ययन के दौरान पाया गया है कि फसल संरक्षण के लिए इन सांपो को खेतों में रखा जाता रहा है।

सम्भवतः आपने कभी किसी पेड़ पर पक्षियों को जोर–जोर से हल्ला करते, बार–बार उड़ते और झपट्टा मारते देखा होगा। ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से कोई धामन उनके अण्डे या बच्चों को खाने पेड़ पर चढ़ा है। सांप पेड़ पर लिपट कर

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

Yellow speckled wolf snake
Lycodon jara

Pics by
Vishal Santra

Common cliff racer
Platyceps rhodorachis

Common wolf snake
Lycodon aulicus

Checkered keelback water snake
Fowlea piscator

आसानी से चढ़ जाते हैं। धामन अपने शरीर को कुछ चपटा कर ग्लाइड करते हुए, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद कर जा सकते हैं। यह 20–25 फुट ऊंचे पेड़ से ग्लाइड करता हुआ, जमीन पर कूद कर आ सकता है। स्नेक पार्क में इन्हें अकसर पेड़ पर कामक्रीड़ा करते देखा गया है। कुछ लोग दूसरों को भ्रमित करने के लिए कहते हैं कि यह अपने दंश से मृत व्यक्ति को चिता में जलते देखता है। धामन का कुछ विस्तार से वर्णन इसलिये किया गया है कि यह सीधा–साधा निर्विष सांप दिनचर होता है, जो हमारे निवास के आसपास रहने से मानव का अभ्यस्त हो जाता है। आकार में बड़ा और काला रंग होने के कारण लोग इससे भयभीत होकर, 'काला नाग' समझ कर देखते ही मारने को दौड़ पड़ते हैं, जबकि यह हमें कितना फायदा पहुंचाता है, इसका हमें अन्दाज नहीं है।

अजगर और सेण्ड बोआ आदि : अजगर से सभी भलीभांति परिचित है। यह बड़े आकार का निर्विष सांप है। इसके छोटे आकार के बच्चे आपने अकसर सड़क पर भिखरियां के पास देखे होंगे। मादा अजगर लगभग 100 तक अण्डे देती है, इनका

आकार बत्तख के अण्डे जितना होता है। इसी प्रकार से सैंड बोआ या माटी सांप भी सपेरों का प्रिय सांप है। इसकी पूंछ आम सांपो की तरह पतली न होकर भोथरी होती है और यह कभी कभी पीछे की तरफ भी गति करता है। इसी कारण इसे भ्रमवश 'दो मुहां' सांप भी कहा जाता है। कुछ लोग दूसरों को भ्रमित करने के लिए कहते हैं कि यह छः महिने एक तरफ से और अगले छह मास दूसरी तरफ से चलता है। हमारे समाज में बातों को तर्क संगत ढंग से; गहराई से वैज्ञानिक कसौटी पर कस कर समझने की कमी है। लोग आसानी से विश्वास कर अपने को सन्तुष्ट कर लेते हैं। सांपो में पूरे पेट पर, आरपार अनुप्रस्थ दिशा में लम्बे शल्क होते हैं। परन्तु यदि ये शल्क पेट की पूरी चौड़ाई पर आरपार तक नहीं है तो यह निविर्ष सांप है; जैसे अजगर।

इसके अलावा हुर्वा, सीतालाट या स्ट्राइप्ड कील बैक सांप भी काफी दृष्टिगोचर होते हैं। यह 40 से 60 सेंटिमीटर होता है। इसकी पीठ पर, सिर से पूंछ तक दो स्पष्ट पीली रेखायें होती हैं। यह सौम्य प्रकृति का दिन में विचरने वाला सांप है। यह सामान्य घास या पानी के आस पास पाया जा सकता है; क्योंकि मेंढक इसका प्रिय भोजन है।

MacKinnons's wolf snake
(Lycodon mackinnoni)

Indian rat snake
(*Ptyas mucosa*)

Common cat snake (*Boiga trigonata*)

Many-banded cat snake (*Boiga multifasciata*)

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

Common Trinket Snake
Coelognathus helena

Pics by
Vishal Santra

Himalayan trinket
(Orthriophis hodgsoni)

Buff stripped keelback
Amphiesma stolatum

Common kukri snake
Oligodon arnensis

इसमें काटने की प्रवृति नहीं होती।

हरा सांप या वाइन स्नेक – एक से डेढ़ मीटर लम्बा होता है। पूरा शरीर तोते की तरह हरे रंग का होता है, सिर बेहद नोकीला होता है।

वोइगा मल्टिसैक्सनेटा, निविर्ष सांप – इसे सन्नी साइड, अपने निवास की दूसरी मंजिल से पकड़ा था। यह टी.वी. केबल के सहारे लिपट कर; बाल्कनी में पहुँचा था। परीक्षण के तौर पर इसे 60 डीग्री के केबल पर चलाया गया। यह सफलता पूर्वक केबल पर लिपट कर आसानी से चढ़ गया। यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश सांप अपने शरीर का एक तिहाई भाग सतह से ऊपर उठा सकता है। (भुजंगासन) और कमरे की दीवार पर दरवाजे, खिड़की की चौखट या अन्य किसी उभार या गर्त के सहारे

Himalayan Stripe-necked Snake
Liopeltis rappi

आसानी से ऊपर चढ़ कर दूसरी या तीसरी मंजिल पर पहुंच सकता है और सीड़ियों के रास्ते तो आसानी से अनेक मंजिलें तय कर सकता है।

सांपों के बारे में प्रमुख तथ्य और मिथ्या धारणायें

1) सांप रात को सोते हुए व्यक्ति को क्यों काटता है?

ये घटनायें शत–प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में होती है। चूहा और छछून्दर सांप का सब से प्रिय भोजन है। चूहे अनाज पर पलते हैं, जो गांव के कच्चे–पक्के मकान में आसानी से उपलब्ध हो जाता है। वह कच्चे मकान में आसानी से बिल बना लेता है। यह स्थान सन्तानोपत्ति तथा उनके पालन के लिए उपयुक्त तथा सुरक्षित होता है। कच्चे–पक्के मकान; खास तौर पर झोपड़ियां सांप के रहने और छिपने के लिए उपयुक्त होते हैं। करैत जो सबसे जहरीला सांप होता है, रात्रिचर होता है और प्रायः नर–मादा साथ–साथ रहते हैं। अनेक बार पीछा किया जाता चूहा, सोये हुऐ व्यक्ति के बिस्तर में छिपने की कोशिश करता है, उसका पीछा करता सांप भी बिस्तर में घुस जाता है और व्यक्ति द्वारा दबने पर उसे दंश मार देता है। अतः कहावत है कि रात को सांप का काटा सुबह नहीं देख पाता। अनेक बार कोब्रा भी रात को सोते व्यक्ति को उपरोक्त कारणों से काटता है। "दैनिक भास्कर" के अनुसार गतवर्ष 27–7–2012 से 30–8–2012 के दौरान नालागढ़ क्षेत्र में पांच व्यक्तियों को सांप ने काटा। सभी व्यक्तियों को सांप ने रात का काटा और सुबह होने तक सभी की मौत हो गई। लेखक के पास समाचार की कटिंग्स है। कहावत है कि रात को सांप का काटा हुआ सुबह नहीं देख पाता।

2) सांपों का खड़ा नृत्य

सांप की कुछ जातियों में; जो प्रचलित खड़ा नृत्य है, वह वास्तव में सांपों को औपचारिक नृत्य अर्थात् संघर्ष होता है, जो क्षेत्रिय विवाद और उसमें निवास करने वाली मादाओं के प्रभुत्व को लेकर होता है। इसका सांप–सांपनी के समागम से कोई ताल्लुक नहीं; जैसे कि आम धारणा है।

3) उड़ने वाला सांप

कोई भी सांप उड़ता नहीं है, क्योंकि उड़ने के लिए पंख चाहिये और सांपों के पंख नहीं होते; हाँ कुछ सांप अपने शरीर को चपटा कर काफी दूरी तक ग्लाइड अर्थात हवा में तैर कर गति कर सकते हैं।

4) सांपों की गति

हम अपने शरीर को स्थानान्तरित करने के लिये चलना, दौड़ना, उछलना, लिपटना आदि अनेक प्रकार की शारीरिक क्रियाएं करते हैं। इसी प्रकार सांप भी अनेक प्रकार की शरीरिक क्रियाएं करते हैं। लेकिन इनमें प्रमुख है 'रेंगना'। हम कहते हैं कि

सांप रेंग कर चलता है। सुरक्षा से जुड़े कर्मचारियों को रेंग कर चलना सिखाया जाता है, वे कुहनी और घुटनों के बल रेंगते हैं, इसी प्रकार सांप अपनी पसलियों से जमीनी पकड़ कर, अपने शरीर को आगे ले जाता है। वैसे सांप खड़ी या तिरछी 'केबल' के सहारे लिपट कर आपके मकान की तीसरी या चौथी मंजिल पर आसानी से पहुँच सकता है। सांप अपने शरीर का एक तिहाई अग्रभाग सतह से ऊपर उठा कर, आगे सरकने की प्रक्रिया अपनाता है, इस तरह वह घर की खिड़की, दरवाजे या उनकी चौखट अथवा किसी खुरदरी सतह का सहारा लेकर आसानी से गति कर सकता है। यह सिढ़ियों के सहारे भी कई मंजिलें तय कर सकता है।

5) सांप का दूध पिना

कुछ लोगों का ख्याल है कि सांप दूध पीता है, इक्के–दूक्के तो यहां तक कहते हैं कि उन्होंने सांप को गाय के पैर से लिपट कर दूध पीते देखा है। गाय एक सौम्य प्रकृति का प्राणी है, लेकिन बेवकूफ नहीं। सांप के मुख में दांतो की कई पंक्तियां होती है; सांप में चूसने की शक्ति नहीं होती। हाँ; सांप कई बार प्यास बुझाने के लिए पात्र में रखा दूध पी सकता है। वैसे भी सांप विशुद्ध रूप से मांसाहारी जीव है; जो अपने भक्ष्य को साबुत ही निगलता है।

6) नागमणि

नागमणी के सम्बन्ध में अनेक भ्रामक धारणायें हैं। कुछ का कहना है, कि जिसके पास नगमणि होती है वह मालामाल हो जाता है। अतः कुछ चालाक लोग कांच के प्रिज्म में बल्ब लगा कर; इसे बैटरी से जोड़ देते हैं और रिमोट या रैगुलेटर अपनी जेब में रख कर इसे इच्छानुसार नियंत्रित करते हैं। आंखों को चौंधिया देने वाली तीव्र रोशनी से व्यक्ति को प्रभावित हो कर ठगा जाता है। ग्राहक को शंका होती है, तो तथाकथित विशेषज्ञ को बुलाया जाता, जो पहले से ही मिला होता है। यह खेल प्रायः अमावस्या की रात्रि में या सुनसान शमशान घाट में खेला जाता है।

नागमणि के सम्बन्ध में भ्रामक धारणा है, कि यह सांप के विष को चूस कर शरीर से खींच लेती है। हमें मालूम है कि सांप का विष रक्तसंचार में जाने के बाद शरीर में अनेक प्रकार की जैव–रासायनिक क्रिया कर शरीर को नुकसान पहुँचाता है। शरीर से सांप के विष को अलग नहीं किया जा सकता, सर्प प्रतिविष से हम उसे निष्क्रिय करते हैं। वैसे भी वर्तमान वैज्ञानिक युग में नागमणि के रूप में किसी पदार्थ की आइडन्टिफिकेशन नहीं हुई है। यदि ऐसा कोई पत्थर होता; तो सर्वप्रतिविष बनाने पर इतना खर्चा क्यों किया जाता और तथाकथित मणि से

नरुला कबीले के लोग निर्धन क्यों रहते।

7)सांप के जोड़े में से किसी एक को मार डालने से दूसरा बदला लेता है

यह भी भ्रामक धारणा है। कुछ सांपों को छोड़; अधिकांश सांप अकेले ही विचरण करते हैं और केवल समागम काल में ही कुछ समय इकट्ठे रहते हैं। वर्तमान में तीव्रगति वाले वाहनों से आवागमन होता है; सांप को कैसे ज्ञात हो सकता है; कि कौन व्यक्ति कहां से आया और कहां चला गया। यदि किसी व्यक्ति को सांप काटता है तो यह कैसे कहा जा सकता है यह सांप उसी का साथी है, जिसे व्यक्ति ने मारा था। वर्तमान में आधुनिक साधनों से सम्पन्न और प्रशिक्षित पुलिस भी अपराधी को नहीं पकड़ पाती। सम्भवतः किसी समझदार व्यक्ति ने सांपों की उपयोगिता को देखते हुये; यह धारणा प्रचलित कर दी होगी। वास्तव में सांप का मस्तिष्क इतना विकसित होता ही नहीं; कि वह बदला लेने की बात सोच सके।

8)सपेरे की बीन की धुन पर सर्प–नृत्यः

आपने अकसर बीन की धुन पर सांप को नाचते देखा होगा। हमारे पास कान नाम का श्रवण यंत्र होता है; जो हवा में उत्पन्न ध्वनि तरंगों को ग्रहण कर; मस्तिष्क के श्रवण–केन्द्र में पहुँचाता है और हमें आवाज सुनाई देती है, परन्तु सांप के पास यह श्रवण यंत्र अंदरुनी होता है। वास्तव में सांप कुछ तेज़ ध्वनि (Loud Sound) तो सुन सकते हैं परंतु बहुत ऊँची ध्वनि (High pitched sounds) या बहुत कम आवाज़ (Low Sounds) नहीं सुन सकते हैं। इसी प्रकार से सांप आवाज पर नहीं; परन्तु बीन के हिलने पर उसे लक्ष्य बनाने को फन हिलाता है। सांप अपने अगले हिस्से के एक तिहाई भाग को जमीन से ऊपर उठा सकता है और इतनी दूर तक फन से मार कर सकता है; अतः सपेरे इतनी ही दूरी का घेरा वहां बना देते हैं। सांप जमीन पर होने वाली हल्की कम्पनों को महसूस कर सकता है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि सांप फेफड़ों से ध्वनि तरंगों को महसूस कर सकता है।

9) आयुर्वेद ग्रन्थ 'सुश्रुत' में चार प्रकार के सविष सांपों का वर्णन है :

1. राजिमन (करैत) 2. दर्वीकर (कोब्रा) 3. मण्डली (वाइपर) और 4. वैकरंज अर्थात् दोगले सांप। जो दो विभिन्न प्रजातियों के समागम से पैदा होते हैं। यह विचारणीय है कि घोड़े और गधे के समागम से उत्पन्न खच्चर की पैदायिश की तरह सांपों में भी यह सम्भव है।

10) सांप का जीभ को बार बार मुख से बाहर अन्दर करनाः

निम्न श्रेणी के प्राणियों की तरह सांप के जीवन में भी गन्ध का विशेष महत्व

है। हम जीभ से स्वाद लेने का काम करते हैं, लेकिन सांप की जीभ घ्राण इंद्रिय का काम करती है। यह हवा में मौजूद गन्ध के कणों को बार बार मुख से स्थित 'जैकबसन' अंग तक पहुँचाती है। इस तरह यह अपने शिकार, उचित जोड़ीदार तथा नेवले और मनुष्य जैसे दुश्मनों की गन्ध लेकर सचेत हो जाता है। यहां यह भी स्पष्ट करना अभिष्ट होगा, कि सांप की घ्राणइंद्रिय – 'सर्प जीभ' का सुगन्ध या दुर्गन्ध से कोई वास्ता नहीं है। जैसे कि आम धारणा है; कि चन्दन या रात की रानी की गन्ध से प्रभावित होकर सांप इनके आसपास रहता है और लोग अपने घर के आसपास इन सुगन्धित पेड़–पौधों को नहीं लगाते। सर्प विशेषज्ञ रोमुलस व्हिटेकर के अनुसार कभी–कभी सांप को सड़ा–गला मांस खाते भी देखा गया है। सड़क पर काफी पहले मरे हुये दुर्गन्ध युक्त जानवरों के मांस के टुकड़ों को खींच कर ले जाते भी देखा गया है।

अन्त में जब तक आप सांपों के बारे पूर्ण अच्छी और प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नहीं कर लेते, सांपों से दूरी बनाये रखें। सांप को कभी भी हल्के में न लें; क्योंकि विषैले सांप ने काट लिया तो तुरन्त सर्पप्रतिविष के अलावा कोई रास्ता नहीं है। अनेक बार अच्छे से अच्छे सर्प विशेषज्ञ भी धोखे में आकर नुकसान उठा बैठते हैं। लेख में प्रामाणिकता का पूरा ध्यान रखा गया है, शंका होने पर सम्पर्क किया जा सकता है या कुछ पूछा जा सकता है। इसी से समाज में ज्ञान वर्धन की स्वस्थ परम्परा का विकास होती है।

हाल ही में पवांटा साहिब में पाया गया इंडियन पॉयथन

फोटो : बलजीत सिंह नगेरा

This compilation of book was done to make people familiar with snakes of Himachal Pradesh. All snakes were photographed live by our team members and have been documented here. I am thankful to forest department for giving us permission from time to time and assure them that we would continue to demystify snakes and scientifically validate the species found in Himachal Pradesh and shall study, if the venom of these snakes is being neutralised or not by the existing Anti-Venom Available in the market, for the benefit of the Snake bite patients.

Thanks,

DR. OMESH KUMAR BHARTI (Padma Shri Awardee)
M.B.B.S.,D.H.M.,M.A.E.(ICMR),
State Epidemiologist,
State Institute of Health & Family Welfare,
Department of Health & Family Welfare,
Government of Himachal Pradesh,
Parimahal. Kasumpti Shimla- India-171009,
Mobile: +91-9418120302

हिमाचल की सर्प प्रजातियां

Acknowledgements

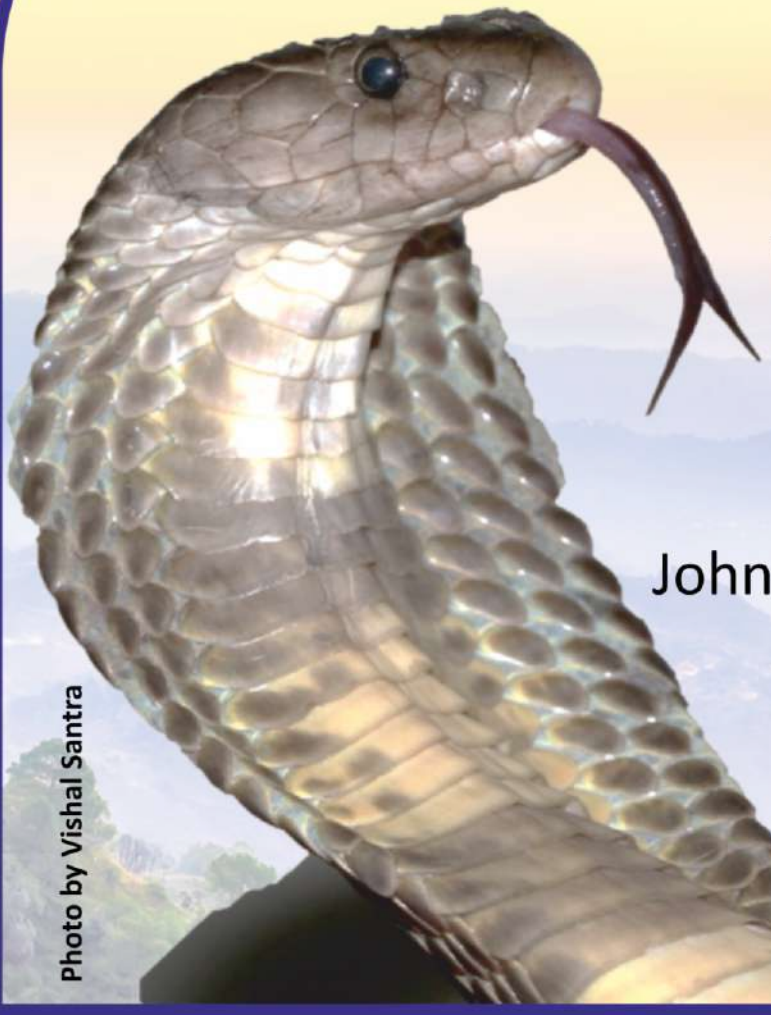

Photo by Vishal Santra

Anita Malhotra[1]
WolfgangWüster[1]
Archana Deka[2]
Robin Doley[2],
Vishal Santra[3]
John Benjamin Owen[4]
Omesh K Bharti[5]

1 School of Natural Sciences, Bangor University, UK
2 Dept of Molecular Biology and Biotechnology, Tezpur University, Assam
3 Simultala Conservationists, Hooghly, West Bengal
4 Captive and Field Herpetology, Anglesey, UK
5 State Institute of Health and Family Welfare, Shimla, Himachal Pradesh

Captive & Field Herpetology
Captive & Field
BITES
SIMULTALA CONSERVATIONISTS (FOUNDATION FOR WILDLIFE)
The Rufford Foundation
www.rufford.org @ruffordgrants

सांपों व सर्पदंश से बचने के कुछ उपाय

सर्पदंश अकसर गाँव में, पानी से भरे खेतों में, घास काटते हुए, राह पर चलते हुए या लापरवाही से सांप, पकड़ने पर हो सकता है। साँप से बचने के लिए घर के अंदर व बाहर निम्न उपाय किए जा सकते है।

शयनकक्ष के आसपास
अनाज का भंडार जमा ना करे

चूहों को न पलने दें।

अँधेरे में टॉर्च का उपयोग करें।

जूते झाड़ कर पहनें।

जमीन पर ना सोएँ।

मच्छरदानी का प्रयोग करें।
गद्दे के चारों और दबा लें

वस्तुएँ एक जगह इकट्ठी ना र खें।

घनी झाड़ीयों में
लम्बे गमबूट डाल कर चलें।

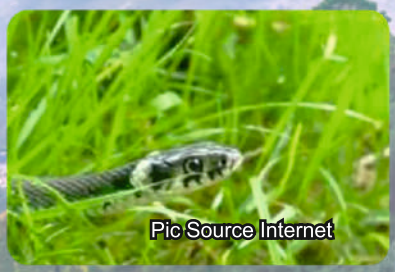

घास काटने से पहले, डंडे से
घास को अच्छी तरह झाड़ लें।

दरवाजे पर ज्यादा जगह ना छोडें,
व दहलीज़ बनाएं।

सांप के काटने पर झाड़–फूंक में
समय व्यर्थ न गवायें, तथा मरीज
को जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंचायें

हर वर्ष 19 सितम्बर को
सर्पदंश जागरुकता दिवस
मनाया जाता है,
अधिक से अधिक जानकरी प्राप्त
करें व सुरक्षित रहें।

Complied and Edited by : Dr. Omesh Bharti & Dr. D.D. Bisht (Copyright reserved)
Printed at : Sehgal Prints, 92186 13130